“मैं अपने शरीर को वश में करता हूँ” (1 कुरिन्थियों 9:27) का
क्या अर्थ है?

उत्तर: आइए इस विषय को थोड़ा गहराई से समझें।

1 कुरिन्थियों 9:27 में लिखा है:
“परन्तु मैं अपने शरीर को मारता-कूटता और वश में रखता हूँ,
कहीं ऐसा न हो कि दूसरों को प्रचार करके मैं स्वयं अयोग्य ठहरूँ।”

जब प्रेरित पौलुस अपने शरीर को अनुशासित करने की बात करता है, तो उसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि हम अपने शरीर को शारीरिक हानि पहुँचाएँ। बल्कि वह यह सिखाता है कि हमें अपने शरीर और इच्छाओं को इस प्रकार नियंत्रित करना चाहिए कि वे परमेश्वर की इच्छा के अधीन रहें।

यह आत्मिक अनुशासन हर उस व्यक्ति के लिए आवश्यक है जो परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीना चाहता है—विशेष रूप से उनके लिए जो सेवा में लगे हुए हैं।

धार्मिक दृष्टिकोण से यह बात आत्म-संयम पर आधारित है, जो पवित्र आत्मा के फलों में से एक है (गलातियों 5:22-23)। शरीर को अनुशासित करने का अर्थ है अपनी पापपूर्ण और अत्यधिक इच्छाओं को नियंत्रित करना, ताकि पवित्र आत्मा हमारे जीवन का मार्गदर्शन

“मैं अपने शरीर को वश में करता हूँ” (1 कुरिन्थियों 9:27) का
क्या अर्थ है?

कर सके।

कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ विशेष रूप से अनुशासन की आवश्यकता होती है—जैसे भोजन और नींद, क्योंकि इनका असंतुलन आत्मिक उन्नति में बाधा बन सकता है।

1. भोजन

अत्यधिक भोजन करना या बिना संयम के बार-बार अपनी इच्छाओं को पूरा करते रहना आत्मिक जीवन को कमजोर कर सकता है। कुछ आत्मिक सफलताएँ केवल उपवास और प्रार्थना के द्वारा ही प्राप्त होती हैं।

मत्ती 17:19-21 में लिखा है:
“तब चेले यीशु के पास अलग आकर बोले, ‘हम उसे क्यों न निकाल सके?’ उसने उनसे कहा, ‘अपने अल्प विश्वास के कारण; क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने
के बराबर हो, तो तुम इस पहाड़ से कहोगे, यहाँ से वहाँ हट जा, तो वह हट जाएगा; और तुम्हारे लिये कुछ भी असम्भव न होगा।’ … ‘परन्तु यह जाति प्रार्थना और उपवास के बिना नहीं निकलती।’”

“मैं अपने शरीर को वश में करता हूँ” (1 कुरिन्थियों 9:27) का
क्या अर्थ है?

धार्मिक समझ:
उपवास शरीर को अनुशासित करता है और आत्मिक संवेदनशीलता को बढ़ाता है। यह हमें सिखाता है कि हम अपनी शक्ति पर नहीं, बल्कि परमेश्वर पर निर्भर रहें। यह विश्वासियों को आत्मिक संघर्ष के लिए भी तैयार करता है (लूका 4:1-4 देखें, जहाँ यीशु ने अपनी सेवा से पहले उपवास किया)।

2. नींद

प्रार्थना करने और परमेश्वर की खोज करने के लिए कभी-कभी नींद का त्याग करना भी शरीर को अनुशासित करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है।

मरकुस 14:37-38 में लिखा है:
“और वह आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा, ‘शमौन, क्या तू
सो रहा है? क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका? जागते और
प्रार्थना करते रहो, ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो; आत्मा तो तैयार है, पर शरीर दुर्बल है।’”

धार्मिक समझ:
प्रार्थना में जागते रहना सतर्कता और परमेश्वर पर निर्भरता को

“मैं अपने शरीर को वश में करता हूँ” (1 कुरिन्थियों 9:27) का
क्या अर्थ है?

दर्शाता है। यह स्वीकार करता है कि हमारी आत्मा तो तैयार रहती है, पर शरीर कमजोर है। यह नए नियम में सिखाई गई जागरूकता (watchfulness) की शिक्षा को दर्शाता है (मत्ती 26:41; 1 पतरस 5:8)।

महत्वपूर्ण बात

पाप से दूर रहना—जैसे व्यभिचार या मद्यपान से बचना—शरीर को अनुशासित करने के समान नहीं है। पाप शरीर और आत्मा दोनों को हानि पहुँचाता है, इसलिए उससे दूर रहना आवश्यक है।

परन्तु सच्चा अनुशासन केवल पाप से बचने में नहीं, बल्कि सक्रिय रूप से धार्मिकता का अनुसरण करने में है।

यदि कोई व्यक्ति पाप के अधीन इस प्रकार बंधा हुआ महसूस करता है कि उससे बचना उसे कठिन या पीड़ादायक लगता है, तो यह संकेत हो सकता है कि मसीह में पूर्ण आत्मिक नवीनीकरण अभी नहीं हुआ है।

ऐसी स्थिति में पवित्रशास्त्र हमें निम्न बातों के लिए बुलाता है:

“मैं अपने शरीर को वश में करता हूँ” (1 कुरिन्थियों 9:27) का
क्या अर्थ है?

पश्चाताप (प्रेरितों के काम 3:19):
“इसलिये मन फिराओ और फिरो, कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ।”

यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा लेना (प्रेरितों के काम 2:38)

पवित्र आत्मा को प्राप्त करना (यूहन्ना 14:16-17)

रोमियों 8:2 में लिखा है:
“क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया है।”

व्यावहारिक अनुप्रयोग

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

“मैं अपने शरीर को वश में करता हूँ” (1 कुरिन्थियों 9:27) का क्या अर्थ है?

Share on:
WhatsApp